प्रबंधन चर्चा तथा विश्लेषण रिपोर्ट 2016–17

वैश्विक व्यापार और घटनाक्रम पर एक नजर

कमोडिटी की कम कीमतों तथा मुद्रास्फीति की कम दरों के कारण विश्व अर्थव्यवस्था में आर्थिक मंदी बनी रही। इसके कारण विकसित अर्थव्यवस्थाओं में ठहराव आ गया तथा भू–राजनीतिक और राजनीतिक अनिश्चितताएं बनी रहीं। इंटरनैशनल मानिटरी फंड(आईएमएफ) ने वर्ष 2017 के दौरान विश्व अर्थव्यवस्था में 3.4 प्रतिशत की विकास दर की संभावना व्यक्त की है।

वर्ष 2016–17 के दौरान भारत में विकास पर एक नजर

वैश्विक मंदी तथा विश्व में व्याप्त कम मांग की पृष्ठभूमि में, भारत में अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में निरंतर वृद्धि दर बनी रही।

वस्तु एवं सेवाकर के लागू हो जाने से कर अनुपालन तथा गवर्नेंस में सुधार होने की उम्मीद है, तथा इससे देश में निवेश व विकास को प्रोत्साहन मिलेगा। मुद्रास्फीति के औसत स्तर, कम चालू बजट घाटे, वित्तीय समेकन तथा नोटबंदी के सकारात्मक प्रभाव के कारण देश में अर्थव्यवस्था में स्थिरता बनी हुई है जिसके चलते सरकार का अनुमान है कि वर्ष 2017–18 के दौरान भारत की जीडीपी 6.75–7.5 प्रतिशत के बीच रहने की संभावना है। इसके अलावा, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था निरंतर विकास के पथ पर है जिसमें सरकार द्वारा 'मेक इन इंडिया', डिजीटलाइजेशन', 'स्टार्ट–अप इंडिया, 'स्किल इंडिया', 'स्वच्छ भारत मिशन', 'उज्ज्वला योजना', 'दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना' इत्यादि योजनाओं को शुरू करना शामिल है। इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में और मजबूती आएगी।

विश्व बैंक के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर वर्ष 2016–17 के दौरान 7 प्रतिशत रहने की संभावना है। विकास दर वर्ष 2017–18 तथा 2018–19 के दौरान क्रमशः 7.6 प्रतिशत तथा 7.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है। भारतीय अर्थव्यवस्था पर नोटबंदी का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जिससे लंबी अवधि के दौरान साफ–सुथरी व डिजीटाइज्ड अर्थव्यवस्था बनने में मदद मिलेगी।

बोस्टन कंस्लटिंग ग्रुप(बीसीजी) की रिपोर्ट के अनुसार भारत की विश्व में तीसरी सबसे बड़ी उपभोक्ता अर्थव्यवस्था है क्योंकि वर्ष 2025 तक इसकी खपत तीन गुणा बढ़कर 4 ट्रिलियन अमरीकी डालर हो जाएगी। इसमें अहम भूमिका उपभोक्ता व्यवहार तथा व्यय पद्धति में आने वाले परिवर्तन होंगे। प्राइसवाटरहाउसकूपर्स की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2040 तक यूएसए को पीछे छोड़ते हुए भारत परचेजिंग पावर पैरिटी के आधार पर विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी।

वर्ष 2017–18 के लिए दृष्टिकोण

आईएमएफ ने अपनी जनवरी 2017 की अपडेट रिपोर्ट में भविष्यवाणी की है कि वर्ष 2016 की मंदी के बाद वर्ष 2017 तथा 2018 में आर्थिक गतिविधियों में तेजी आएगी। यह विशेषकर उभरते बाजारों तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में होगा। यूएन की वर्ल्ड इकोनामिक सिचुएशन एंड प्रास्पेक्ट(डब्ल्यूईएसपी) रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे विकास की गति पकड़ रही है जिसके परिणामस्वरूप इसकी जीडीपी की विकास दर वर्ष 2016 तथा 2017 में क्रमशः 7.3 प्रतिशत तथा 7.5 प्रतिशत रहने की संभावना है। भारत की प्रतिस्पर्धा क्षमता में सुधार हुआ है यह सब गुड्स माक्रिट दक्षता, बिजनेस साफिसटिकेशन तथा इनोवेशन के कारण हुआ है। वैश्विक विकास दर वर्ष 2017 तथा 2018 में क्रमशः 3.4 प्रतिशत तथा 3.6 प्रतिशत रहने की संभावना है।

एमएमटीसी – 2016–17 का सिंहावलोकन

वित्तीय समीक्षा

उपरोक्त अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक परिवेश में आपकी कंपनी ने पिछले वित्तीय वर्ष के 1,24,604.7 मिलियन रुपए की तुलना में वर्ष 2016–17 में 1,15,934.3 मिलियन रुपए का कारोबार किया। इस कारोबार में 15801.4 मिलियन रुपए का निर्यात, 84802.6 मिलियन रुपए का आयात तथा 153330.3 मिलियन रुपए का घरेलू व्यापार शामिल है। व्यापार कार्यनिष्पादन में यह कमी कई कारणों से आई जिसमें यूरिया के औसत मूल्य में आई गिरावट, कोल इंडिया द्वारा कोयले की घरेलू सप्लाई में की गई बढ़ोतरी के कारण सरकारी पावर प्लांटों के लिए स्टीम कोल का आयात न करना, आयरन ओर की माइनिंग पर लगा प्रतिबंध जिसके कारण निर्यात आदि में आई कमी शामिल है। आपकी कंपनी ने वर्ष 2015–16 के 1965.1 मिलियन रूपए की तुलना में इस

वर्ष 2244.5 का व्यापारिक लाभ अर्जित किया। सामान्य गतिविधियों से कर पूर्व लाभ वर्ष 2015–16 के 579.1 मिलियन रुपए की तुलना में 812.3 मिलियन रुपए रहा। कंपनी ने पिछले वर्ष के 548.9 मिलियन रूपए की तुलना में इस वर्ष 570.6 मिलियन रुपए का निवल लाभ दर्ज किया है। इस प्रकार प्रत्येक 1 रुपए की फेस वैल्यू के शेयर से दिनांक 31.03.2017 को 0.57 रुपए अर्जन आता है। इसके अलावा, एमएमटीसी निरंतर जीरो दीर्घावधि ऋण वाली कंपनी बनी हुई है।

निधियों के स्रोत तथा इनका उपयोग

दिनांक 31 मार्च 2017 को कंपनी की निधियों के स्रोत में 14340.77 मिलियन रूपये का शेयरहोल्डर्स फंड था जिसमें 1000 मिलयन रूपये की इक्विटी शेयर पूंजी तथा नॉन करंट एवं करंट देयताएं क्रमशः 1876.96 मिलियन रूपये तथा 44565.7 मिलियन रूपये शामिल हैं। इन निधियों का उपयोग अन्य के साथ–साथ दिनांक 31 मार्च 2017 को 9920.79 मिलियन रूपये नॉन करंट परिसंपत्तियों तथा 50862.11 मिलियन रूपये करंट परिसंपत्तियों में किया गया है।

आंतरिक नियंत्रण प्रक्रिया

एमएमटीसी में दैनिक मामलों का प्रबंधन विभिन्न प्रबंधकीय स्तरों पर सुपरिभाषित शक्तियों के प्रत्यायोजन के अनुसार किया जाता है। निदेशक मंडल द्वारा गठित संबंधित निदेशक समितियों जिनका विवरण संलग्न कारपोरेट गवर्नेंस की रिपोर्ट में दिया गया है, द्वारा प्रमुख मामलों पर सतक्रतापूर्ण निर्णय लेने के लिए विचार विमर्श के आधार पर किया जाता है।

एमएमटीसी की एक सुव्यवस्थित आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली तथा प्रक्रिया है जो इसकी विभिन्न गतिविधियों के अनुरूप है। निगम का एक प्रभावी आंतरिक लेखा परीक्षा प्रभाग है जो पूरे वर्ष लेखा परीक्षा के लिए बाहरी लेखा परीक्षा करने वाली फर्मों के साथ मिलकर काम करता है। बुलियन लेनदेन की कंकरंट लेखा परीक्षा, पूर्व वर्षों के बुलियन लेनदेन हेतु विशेष लेखा परीक्षा आदि द्वारा आंतरिक लेखा परीक्षा को और अधिक सशक्त बनाने के लिए वर्ष के दौरान अनेक पहल की गईं। इन पहलों को आलोच्य वर्ष के दौरान भी जारी रखा गया। आंतरिक नियंत्रण प्रणालियों, व्यापारिक प्रस्तावों पर जोखिम निर्धारण तथा विभिन्न व्यापार करने के लिए सिस्टेमेटिक एसओपी का ध्यान रखने के लिए सुपरिभाषित आंतरिक नियंत्रण संहिता (मैनुअल), कारपोरेट जोखिम प्रबंधन नीति तथा एमएमटीसी के निदेशक मण्डल द्वारा अनुमोदित विभिन्न व्यापारों के लिए व्यापार व आंतरिक नियंत्रण संहिता (मैनुअल) बनाए गये हैं।

वित्तीय रिपोर्टों पर कंपनी के सांविधिक लेखा परीक्षकों तथा आंतरिक लेखा परीक्षकों की चिंताओं एवं टिप्पणियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए निदेशकों की लेखा परीक्षा समिति उनके साथ नियमित रूप से बैठकें करती है। प्रबंधन द्वारा लेखा परीक्षा समिति के आदेशों का गंभीरता से कार्यान्वयन किया जाता है।

सहायक कंपनी

अक्तूबर 1994 में निगमित एमएमटीसी ट्रांसनेशनल पीटीई लिमिटेड, सिंगापुर (एमटीपीएल) आपकी कंपनी के पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी है जिसका उद्देश्य साउथ ईस्ट एशिया के बाजारों में व्यापार तथा वाणिज्य के उदारीकरण/वैश्वीकरण के अवसरों का लाभ उठाना है। यह कंपनी कमोडिटी की ट्रेडिंग करती है तथा इसने स्वयं को सिंगापुर की एक विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठित कंपनी के रूप में स्थापित कर लिया है। एमटीपीएल ने गत वर्ष के 108.52 मिलियन अमरीकी डालर के कुल बिक्री कारोबार की तुलना में वर्ष 2016–17 के दौरान 113.17 मिलियन अमरीकी डालर का कुल बिक्री कारोबार किया है। वर्ष 2016–17 के दौरान एमटीपीएल को पिछले वर्ष की 0.28 मिलियन अमरीकी डालर की हानि की तुलना में 0.04 मिलियन अमरीकी डालर का नेट लाभ अर्जित किया। 31 मार्च, 2017 की स्थिति के अनुसार एमटीपीएल की नेटवर्थ 15.39 मिलियन अमरीकी डालर थी।

सिंगापुर सरकार की संस्था इंटरनेशनल एंटरप्राईज द्वारा एमटीपीएल को वर्ष 2000 से 2013 तक प्रतिष्ठित अवार्ड "ग्लोबल ट्रेडर प्रोग्राम (जीटीपी)" प्रदान किया गया था।

वर्ष 2016–17 के लिए समूहवार बिजनेस समीक्षा

खनिज

आपकी कंपनी के खनिज समूह ने पांच दशकों की अवधि के दौरान खनिज के व्यापार में अहम भूमिका निभाई है। पिछले दशक में

एमएमटीसी ने अपने मिनरल पोर्टफोलियो को मजबूत करते हुए, बाजार की अनिश्चिताओं का सामना करने के लिए गतिशील तथा विवेकशील रणनीतियां अपनाकर अपने इंफ्रास्ट्रक्चर की सुविधाओं में विस्तार किया। साथ इसने अपनी व्यापार वचनबद्धताओं पर पूरा ध्यान दिया और इसको महता प्रदान की। इसके अलावा सेवा तथा उत्पादों की गुणवत्ता को भी बढ़ावा दिया।

ग्रुप मूल्यसंवर्धन के क्षेत्र में अपनी स्पर्धा बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। खनिज के मूल्य संवर्धन के लिए एमएमटीसी द्वारा और अधिक फिलिप प्रदान की है। एमएमटीसी द्वारा संयुक्त रूप से प्रोन्नोत 1.1 मिलियन प्रतिवर्ष उत्पादन क्षमता का उद्यम प्रतिवर्ष 2.2 मिलियन टन के विभिन्न प्रकार के खनिजों का उपभोग करता है।

वर्ष 2016–17 के दौरान आपकी कंपनी के खनिज ग्रुप द्वारा रुपए 12873 मिलियन के कारोबर का लक्ष्य प्राप्त किया गया है। जिसमें रुपए 9228.60 मिलियन का आयरन ओर, क्रोम ओर लगभग 349940 मिलियन रुपए का क्रोम कोन्सैन्ट्रेट शामिल है। वर्तमान निर्यात–आयात नीति के अनुसार आयरन ओर (64 प्रतिशत तथा अधिक फी के साथ), क्रोम ओर, क्रोम ओर कन्स्ट्रेट तथा मैगनीज ओर का निर्यात एमएमटीसी द्वारा किए जाने का अनुमोदन है। ग्रुप ने 145.65 मिलियन रुपए के खनिज ओर जिसमें 54.50 मिलियन रुपए का लाइम स्टोन तथा 91.15 मिलियन रुपए के दूसरे ओर शामिल हैं, का घरेलू व्यापार के कारोबर का लक्ष्य भी प्राप्त किया है।

आयरन ओर माइनिंग पर चल रहे प्रतिबंध तथा बेल्लारी–होस्पेट सैक्टर से निर्यात के लिए परिवहन पर लगी रोक, इस्टरन सैक्टर से निर्यात का नियमन, भारतीय मूल के आयरन ओर का एफओबी पर अप्रतिस्पर्धात्मक मूल्य होना तथा दूसर आपूर्तिकर्त्ता जैसेकि आस्ट्रेलिया, ब्राजील में (निर्यात तथा निर्यात ड्यूटी के लिए रेल भाड़े में वृद्धि के कारण) आयरन ओर की मांग/मूल्य के अन्तराष्ट्रीय बाजार में कम रहने के कारण तथा चीन की अर्थव्यवस्था में सामान्य रूप से आई मंदी, आयरन ओर की घरेलू मांग में आई वृद्धि इत्यादि का वर्ष 2016–17 के दौरान आयरन ओर निर्यात की मांग पर प्रभाव पड़ रहा है। इस कारण प्रतिस्पर्धा के बावजूद भी एमएमटीसी समीक्षा वर्ष के दौरान अपनी मुख्य निर्यातक की भूमिका को बरकार रखे हुए है। एमएमटीसी ने स्वयं को कई दशकों से जापानी तथा दक्षिणी कोरियाई बाजारो में विश्वसनीय आपूर्तिकर्त्ता के रूप में स्थापित किया हुआ है तथा कंपनी का यह पोर्ट फोलियो एमएसटीसी को स्थाई व्यापार दिलाता रहेगा। क्रोम ओर तथा क्रोम कंस्ट्रेट्स पर दिनांक 26.05.2016 से एड वैलोरम निर्यात ड्यूटी आरंभ होने के कारण इन मदों के निर्यात में कमी आई है। इसके अलावा भारत में इस्पात उत्पादन/खपत में हुई वृद्धि से घरेलू उद्योग की आयरन ओर, क्रोम ओर तथा मैगनीज ओर की मांग बढ़ने से भविष्य में इन उत्पादों की निर्यात के लिए उपलब्धता पर प्रभाव पड़ेगा। फ्रेरो क्रोम के अधिक निर्यात से क्रोम ओर तथा कान्सेन्ट्रेट्स की निर्यात के लिए उपलब्धता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

बहुमूल्य धातु, रत्न व आभूषण

जेम्स एण्ड ज्वेलरी सैक्टर की भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 6 से 7 प्रतिशत का योगदान देता है। यह एक तेज गति से फैलने वाला सैक्टर है जो पूर्णतः निर्यातोन्मुख व अधिक श्रम खपत करने वाला है।

आपकी कंपनी बुलियन व्यापार में माक्रिट लीडर की हैसियत रखती हे जो कि पूरे भारत में फैले केन्द्रों से ऑपरेट करने की क्षमता रखती है। आपकी कंपनी को अदभुत उत्पाद व सेवाएं ऑफर करने की सहजता प्राप्त है जो कि ग्राहक के साथ सही रिश्ते बनाए रखने में सक्षम है।

बुलियन की कीमतों में भारी अस्थिरता तथा भारतीय रुपए व यूएस डॉलर की विनिमय दर में भारी अस्थिरता के बावजूद हम अपनी स्थिति को बरकरार रखने में सफल रहे हैं। आपकी कंपनी के बहुमूल्य धातु ग्रुप ने 60391.40 मिलियन रुपए के कारोबार का योगदान रहा है जो कि कंपनी के कुल कारोबार का लगभग 50 प्रतिशत है।

इस ग्रुप के कारोबार में 48743.60 मिलियन रुपए का सोने तथा चांदी का आयात, 11646.10 मिलियन रुपए का घरेलू व्यापार तथा 1.50 मिलियन यूएस डॉलर का गोल्ड मैडालियन का निर्यात शामिल है। वर्ष 2016–17 के लिए देश के बुलियन व्यापार में आपकी कंपनी की भागीदारी, सोने के लिए 2 प्रतिशत तथा चांदी के लिए 10 प्रतिशत है। एमएमटीसी निर्यातकर्त्ताओं तथा घरेलू व्यापारियों/ज्वेलर्स को बुलियन की आपूर्ति करने के लिए नामित एजेन्सियों में से एक है। एक नामित बॉडी के रूप में काम करते हुए, एमएमटीसी भारत सरकार के साथ मिलकर देश से जेम्स व ज्वेलरी का निर्यात करने के लिए नीति बनाने तथा पैम्प इंडिया के आधार पर ज्वेलरी सैक्टर का विकास करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। वर्ष 1980 से, जब झण्डेवालान ज्वेलरी कॉम्पलैक्स को वाणिज्य मंत्रालय ने मंजूरी दी तब से ही, हमें सरकार का सहयोग प्राप्त होता रहा है। इस क्रम में एमएमटीसी को सितंबर 1982 से डीटीए को भी गोल्ड सप्लाई करने के लिए नामित एजेंसी बनाया जाता है।

भारत सरकार ने 2015 में गोल्ड मोनेटाइजेशन स्कीम भी शुरू की है जिसके तहत एमएमटीसी को दो प्रमुख प्रोजैक्टस, इंडियन गोल्ड कायन की बिक्री तथा सरकार के माध्यम एवं दीर्घ कालिक गोल्ड डिपोजिटर्स के लिए ई–ऑकशन के महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स लागू करने का काम सौंपा गया है। इससे घरेलू स्वर्ण को अर्थव्यवस्था में संचारित करने को प्रोन्नत किया जा सकेगा तथा बुलियन आयात में कमी लाकर मूल्यवान विदेशी मुद्रा की भी बचत होगी।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा जारी इंडियन गोल्ड कॉयंस (आईजीसी) अभियान में आपकी कंपनी के बहुमूल्य धातु, ग्रुप द्वारा भारत सरकार की मुंबई तथा कोलकाता टकसाल में ढाले गए 5 ग्राम, 10 ग्राम के सोने के सिक्के तथा 20 ग्राम की सोने की बार की मार्केटिंग की गई है। वर्ष 2016–17 के दौरान आईजीसी की बिक्री से 1291 मिलियन रुपय का कारोबार हुआ है। आपकी कंपनी ने गोल्ड कॉयंस की बिक्री के लिए बैंको से भी टाइ–अप किया है। भारतीय

गोल्ड कॉयंस के वितरण नेटवक्र को और बढ़ाने के प्रयास जारी है। एमएमटीसी लिमिटेड की प्रमुख गतिविधि स्वर्णोत्स्व का आयोजन किया गया। वर्ष 2016 के दौरान स्वर्णोत्सव, अक्षय तृतीया तथा दिवाली पर क्रमशः 68 मिलियन तथा 210 मिलियन रुपए का कारोबार हुआ।

शोरूम बिक्री के अलावा आपकी कंपनी स्वर्ण/चांदी के मैडालियन की सप्लाई भी कई कारपोरेट्स को कर रही है। वर्ष के दौरान आपकी कंपनी ने माता वैष्णो देवी तथा माता मनसा देवी श्राइन बोर्डस को वहां चढ़ावे में प्राप्त सोने/चांदी को रिफाइन करके उन्हे बिक्री के लिए मैडालियन/बार सप्लाई की है। इसके अलावा हमने बाबा बंदा सिंह बहादुर के 300वें शहीदी दिवस तथा श्री गुरू गोविंद सिंह जी की 350वीं जयन्ती पर चांदी के स्मृति सिक्के तथा सिख साम्राज्य की मुद्रा के चांदी के प्रतिरूप भी बनाकर सप्लाई किए है।

कंपनी के संयुक्त उद्यम एमएमटीसी पैंप इंडिया प्रा. लिमिटेड का कारोबार 234901.61 मिलियन रुपए का रहा जिसमें (करोपरान्त) 149. 29 मिलियन रुपए का लाभ रहा एमएमटीसी ने वित्त वर्ष के दौरान एमपीआईपीएल द्वारा निर्मित 2.87 मि. टन गोल्ड बार भी घरेलू बाजार में बेच कर 7922.2 मिलियन रुपए का कारोबार किया। खुद्रा बिक्री के हमारे दूसरे संयुक्त उद्यम, एमएमटीसी गीतांजली लिमिटेड ने भी वर्ष 2015–16 के 283.24 मिलियन रुपए के कारोबार की तुलना में वर्ष 2016–17 के लिए 266.24 मिलियन रुपए का कारोबार दर्ज किया।

स्वर्ण व्यापारियों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण, इस व्यापार में होने वाले लाभ में निरंतर कमी देखी गई है। गुड्स एवं सर्विस टैक्स (जीएसटी) के आ जाने से इस उद्योम के आकार में परिवर्तन की संभावना है।

भारत में इस धातु, के पारंपरिक महत्व के कारण, जिसमें बदलाव लाना कठिन है, मांग के मजबूत रहने पर इस वर्ष सोने की मांग मजबूत रहने की आशा है।

वर्ष 2016 के अंत तक प्रेसियस मेटल स्पेश में सिल्वर दूसरा बेस्ट असेट रहा है। वर्ष के आरंभ तक यह 16.5 प्रतिशत रहा। यह केवल पैलाडियम से पीछे था। वर्ष 2017 के दौरान सिल्वर की कीमते ऊपर रहने की संभावना है जो कि सुदृढ़ फण्डामेंटलस के कारण होगा जिसमें माइन सप्लाई में संकुचन होने से औद्योगिक तथा ज्वेलरी की मांग में वृद्धि की संभावना है।

आपकी कंपनी का बहुमूल्य धातु ग्रुप मेट्रो तथा नॉन मेट्रो शहरों के बड़े ग्राहकों को निरंतर सम्पक्र से वापिस लाने का प्रयास करेगा। वर्ष के पहले अर्ध भाग में ज्वेलरों की हड़ताल के कारण डीटीए गोल्ड आपरेशन को सशक्त बनाया गया था। एमएमटीसी ने मुम्बई एसईजेड में एसईईपीजेड़ यूनिट स्थापित की है तथा सीतापुरा, जयपुर एसईजेड़ में भी यूनिट लगाने का प्रयास कर रही है जिससे डीटीए आपरेशन में और वृद्धि हो पायेगी। हालांकि पिछले वर्ष के मुकाबले एमएमटीसी के सिल्वर आयात में कमी आई है एमएमटीसी का माक्रिट शेयर पिछले वर्ष 8 प्रतिशत की तुलना में 10 प्रतिशत तक बढ़ा है। डीटीए आपरेशन को बढ़ाने, एफटीडब्ल्यूजेड़ के माध्यम से बुलियन आयात करने की प्रक्रिया को आसान बनाने, प्रतिस्पर्धात्मक मूल्य पर बेहतर सप्लाई तथा पर्याप्त सप्लाई बेस बनाने के लिए नए विदेशी सप्लायरों का नामांकन करने, जीएसएम स्कीम के तहत बुलियन को ई–आकशन का सफल रोल आउट करना इत्यादि वर्तमान वर्ष की रणनीति में शामिल है। डोर इम्पोर्ट बिजनेस की तरह ग्रुप व्यापार के नए आयामों की खोज करेगा जिसके लिए सरकारी विभागों से जोर शोर से बात चल रही है, कस्टम द्वारा जब्त सोना/चांदी तथा प्रमुख मंदिर ट्रस्टों के साथ आक्शन की बात चल रही है।

धातु तथा औद्योगिक कच्चा माल

वर्ष 2016–17 के दौरान आपकी कंपनी के मेटल ग्रुप ने 6928.10 मिलियन रुपए का कारोबार किया जिसमें 2415.80 मिलियन रुपए का पिग आयरन निर्यात, जिंक, निकल तथा टिन तथा कोबाल्ट जैसे अलौह धातु के 2733.40 मिलियन रुपए का अयात, आन्टीमोनी जैसे औद्योगिक कच्चे माल का 42.80 मिलियन रुपए का आयात तथा पिग आयरन, स्लैग, विल्लेटर इत्यादि स्टील प्रोडक्टस में 1736.10 मिलियन रुपए का घरेलू व्यापार शामिल है। पिग आयरन का उत्पादन एमएमटीसी के ओडिसा सरकार के साथ स्थापित मैसर्स नीलाचल इस्पात निगम लिमिटेड संयुक्त उद्यम द्वारा किया जाता है।

एमएमटीसी की शक्ति इसके सप्लायर बेस में निहित है जिसमें सभी बेस व माइनर व मेजर धातु के प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय सप्लायरों सहित प्रमुख पीएसयू, रेलवे तथा आयुद्ध फैक्ट्री शामिल है जो एक स्थायी व्यापार स्रोत को सुनिश्चित करते हैं। तथापि, नॉन स्टैण्डर्डाइजिड तथा कस्टम स्पेसिफाइड माल इम्पैनलड सप्लायर के पास उपलब्ध नहीं है। आयायतित अलौह धातु की खरीद में लगभग 3–4 सप्ताह का समय लगता है जो कि स्थानीय उद्योगो की सप्लाई करने में कठिनाई उत्पन्न करता है।

अलौह धातु के व्यापार के अवसरों में, माइनर मेटल तथा फेरो अलाय बाजार, मूल्य निर्धारित न किए गए अथवा एक्स बोण्ड अलोह धातु की बिक्री एसईजेड़ अथवा एक्स एफटीडब्ल्यूजेड़ आधार पर व्यापार का विस्तारण किया जाना है जिसमें अलौह धातु के आयातक के लिए सप्लाई बेस को बढ़ाना है। जोखिमों में घरेलू तथा आयायतित स्क्रैप से सैकेण्डरी तथा रिसाइकल्ड माल के उत्पादन में वृद्धि तथा घरेलू, एल्युमीनियम, लैड तथा जिंक जैसे बेस मेटल के घरेलू उत्पादन में वृद्धि वैकल्पिक सप्लाई स्रोत का उत्पन्न होना शामिल है।

आपकी कंपनी के अलौह धातु ग्रुप द्वारा एफटीडब्ल्यूजेड के माध्यम से अलौह धातु की बिक्री की संभावनाओं का पता लगाने के लिए उत्पादन कर्त्ताओं तथा बड़े विदेशी व्यापारियों के साथ टाई–अप करने की संभावनाओं का भी पता लगाया जाएगा जिससे कि एमएमटीसी बाजार में दूसरे व्यापारियों के मुकाबले बेहतर वाणिज्यिक तथा प्रतिस्पर्धात्मक शर्तों पर माल ऑफर कर सके।

वर्ष 2016–17 के दौरान स्टील सेग्मेंट में ग्रुप ने घरेलू बिक्री के अलावा अन्तरराष्ट्रीय बाजार में लगभग 2415.8 मिलियन रुपए के मूल्य के

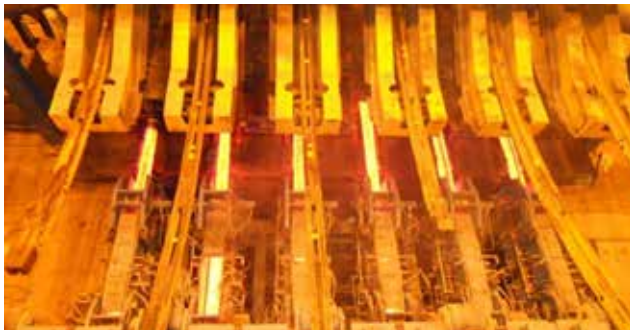

नॉन–अलायी पिग आयरन की बिक्री की है। ग्रुप हमारे उत्पाद पोर्ट फोलियों एवं व्यापार माडल एवं नीति से मेल खाते हुए, कांडला, मुद्रा तथा चेन्नै पोर्ट्स से आयात वित्त अवसरो पर भी नजर रखे हुए हैं। ग्रुप ने एचएमएस तथा श्रेडिड स्क्रैप्स की सप्लाई के लिए लगभग 10 विदेशी सप्लायरों को सूचीबद्ध किया है। ग्रुप बगलादेश तथा नेपाल के बाजारों में पिग आयरन तथा बिलेट्स के निर्यात की संभावनाओं का पता लगाएगा।

कृषि उत्पाद

आपकी कंपनी के कृषि समूह ने वित्तीय वर्ष 2016–17 के दौरान कुल 2089.60 मिलियन रूपए का कारोबार किया। इस कारोबार में 1057.60 मिलियन रूपए की दालों का आयात तथा 1032 मिलियन रूपए मूल्य की दालों का घरेलू कारोबार शामिल है। खुले बाजार में कीमतों के भारी उतार–चढाव को नियंत्रित करने के लिए समूह ने सरकारी खाते में दालों का आयात किया।

एमएमटीसी लगभग ढाई दशकों से कृषि उत्पाद का व्यापार कर रही है जिसके आरंभ में सोया डीओपी के निर्यात और क्रूड सोया आयल का घरेलू बाजार से विपणन के लिए तत्कालिक सनराईज सेगमेंट में सोयाबीन का प्रसंस्करण किया गया। सरकारी खाते में या वाणिज्यिक आधार पर चावल, गेहूं और चीनी जैसे खाद्यान के आयात/निर्यात के भी पर्याप्त अवसर थे। मूल्यों के संतुलन के लिए दालों के आयात के लिए एमएमटीसी की अग्रणी भूमिका रही है। एमएमटीसी को दालों के बाजार स्टाक के लिए एक एजेंसी के रूप में नामित किया गया। भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार वित्त वर्ष 2016–17 के दौरान बफर स्टॉक कार्यक्रम के लिए लगभग 3.4888 लाख मी.टन की विभिन्न दालें जैसे :– तुर, उड़द, मसूर और चने का आयात किया। इन दालों का विभिन्न पोर्ट गोदामों में भण्डारण किया गया और भारत सरकार के उपभोक्ता मामलों के विभाग के परामर्श पर राज्य सरकारी एजेंसियों और खुले बाजार में बिक्री के लिए जारी किया जा रहा है।

घरेलू उत्पादन में निर्यात और आयात के अवसर मिले हैं। कृषि की मदों में आयी अत्याधिक अस्थिरता अंतर्राष्ट्रीय पण्य बाजारों और मुद्रा दरों में आयी लोचता मूल्य प्रवृति के आधार पर प्राकृतिक उतार–चढ़ाव जैसे सूखा/मानसून इत्यादि के अतिरिक्त कृषि व्यवसाय के लिए खतरा पैदा होता है।

विश्व में स्टील, कृषि उत्पाद, खाद्य तेल इत्यादि सभी कमोडिटी के बाजारों में आयी मंदी रही है। चीन, ईयू और अन्य देशों में आर्थिक मंदी के कारण कमोडिटी बाजारों पर बुरा असर पड़ा है। यह समूह भी इसका अपवाद नहीं है।

वर्ष 2017–18 दालों को छोड़कर कृषि उत्पादों के लिए कोई अधिक उत्साहजनक नहीं रहा यदि हम कृषि उत्पादों के अर्न्तराष्ट्रीय बाजारों की वास्तविकता पर विचार करें, तो अभी गेंहू चावल, खाद्य तेल इत्यादि जैसी प्रमुख कमोडिटीज में विकास लाने की आवश्यकता है। सरकार से सरकार की व्यवस्था के आधार पर इंडोनेशिया और मिश्र को भारतीय चावल निर्यात करने की पहल करते हुए प्रयास किये जा रहे हैं। मूल्य स्थिरीकरण योजना के अंतर्गत दालों के आयात के लिए एमएमटीसी एक सरकारी नोडल एजेंसी है।

उर्वरक एवं रसायन

एमएमटीसी भारत में एक प्रमुख उर्वरक आयातक है। यह तैयार मध्यम और कच्चे उर्वरक का आयात करती है। एमएमटीसी लगभग 3 से 4 मिलियन टन उर्वरक का आयात करती है। यह भारत में बहुत से संस्थागत ग्राहकों को उर्वरक आपूर्ति करने वाला विश्वसनीय स्रोत है और विश्वस्त आपूर्तिकार के रूप में कार्य कर रहा हैं। यह पिछले चार दशकों में मेहनत से बनाई गई विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा के कारण के कारण संभव हुआ है।

एमएमटीसी ने अपने क्षेत्र में विशेष स्थान बनाया है और इसे क्रय, बिक्री के क्षेत्र में चार दशकों के अनुभव और श्रेष्ठ नेटवक्र का लाभ मिला है जिससे इसके आपूर्ति आधार का विकास हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप आज एमएमटीसी सभी उर्वरक उत्पादों के क्रय और विक्रय में विकास के लिए में इकलौती कंपनी है।

आपकी कंपनी का उर्वरक समूह उर्वरक विभाग, उर्वरक और रसायन मंत्रालय की ओर से यूरिया का आयात करता है। वित्तीय वर्ष 2016–17 के दौरान कंपनी के उर्वरक एवं रसायन समूह ने वित्तीय वर्ष के दौरान 26734.10 मिलियन रुपए का कारोबार किया जिसमें भारत सरकार की ओर से लगभग 23913 मि. टन यूरिया और 2608.30 मिलियन रुपए का फास्फारिक एसिड, एमओपी, और यूरिया जैसे गैर–सरणीकृत उर्वरकों का आयात और 1.80 मिलियन रुपए का उर्वरको का घरेलू व्यापार किया गया। 211 मिलियन रुपए मूल्य का 10000 मी. टन यूरिया नेपाल को निर्यात किया गया। यूरिया मिट्टी के लिए आवश्यक पोषक तत्व नाइट्रोजन में मिलने वाला प्रमुख उर्वरक है।

समूह की उत्पाद श्रेणी में पाउडर फार्म में मोनो अमोनियम फास्फेट (पीएसएपी) को नये उत्पाद के रूप में शामिल किया गया है। इसका समीक्षाधीन अवधि के दौरान 241.70 मिलियन रुपए का कुल कारोबार हुआ है।

उर्वरक उद्योग पिछले वर्षों से भारत में कठिन दौर से गुजर रहा है। सामान्यतः समीक्षाधीन वर्ष भारत में उर्वरक उद्योग के लिए कठिन दौर

रहा है क्योंकि सामान्य से कम वर्षा होने के कारण कृषि में प्रयुक्त रसायनिक उर्वरक की मात्रा पर सीधा असर हुआ है। विभिन्न उर्वरकों के आयात मूल्य में अंतर के कारण मांग में काफी कमी आई है जिसके कारण एमएमटीसी का व्यापार बुरी तरह से प्रभावित हुआ।

सरकार के खाते में यूरिया के आयात के संबंध में भारत के कुल आयात में कमी आई है जिससे एमएमटीसी का समग्र बिजनेस वाल्यूम भी प्रभावित हुआ है। घरेलू उत्पादन में वृद्धि जिसने उत्पादन एवं खपत के अंतर को बहुत कम किया, के कारण यूरिया के आयात में कमी हुई।

भारत के लिए वर्ष 2017–18 की संभावना मानसून एवं सरकार की नीति पर निर्भर होगी। वैश्विक अर्थव्यवस्था निरंतर चुनौतियां का सामना कर रही है। भारत सहित विश्व के देशों द्वारा खाद्य अप्रसार महूसस किए जाने के साथ विशेषकर विकासशील देशों का ध्यान कृषि में उत्पादकता बढ़ाने पर होगा। तथापि, यूरिया, डीएपी तथा एमओपी की क्षमताओं में नए परिवर्धन से सभी प्रमुख उर्वरकों की वैश्विक आपूर्ति स्थिती पर्याप्त होने की आशा है।

व्यापार में वर्तमान उत्पाद श्रंखला की मात्रा को बढ़ाने तथा ट्रेडिंग के लिए नए उर्वरक उत्पादों की तीव्रता से पहचान करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। वर्ष 2017–18 के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्य योजना में वर्तमान ग्राहकों को बनाए रखने एवं नए ग्राहकों को जोड़ने के साथ–साथ वर्ष 2017–18 में उर्वरक प्रभाग द्वारा यूरिया की आवश्यक मात्रा के आयात तथा फास्फेट कच्चा माल इंटर मीडिएट्स एंव तैयार उर्वरकों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए एमओपी का आयात शामिल है।

कोयला एवं हाईड्रोकार्बन

वर्ष 2014–15 के दौरान भारत द्वारा नॉन कोकिंग कोल का आयात लगभग 170 मिलियन मी. टन के चरम तक पहुंचा था। तथापि, इसके पश्चात घरेलू आपूर्ति में सुधार होने के कारण नान कोकिंग कोल के आयात में गिरावट देखी गई। घरेलू उत्पादन में वृद्धि तथा ऊर्जा संयत्रों को पिट हैड्स से डिस्पैच को ध्यान में रखते हुए नॉन कोकिंग कोल के प्रमुख उपभोक्ता, पॉवर यूटिलिटीज़ द्वारा आयातित कोयले की खपत में बहुत कमी की गई।

तथापि, तटीय क्षेत्रों में स्थित सयंत्रों अथवा थर्मल संयंत्र जिनके बायलर आयातित कोयले के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, निरंतर आयात करते रहेंगे। घरेलू उत्पादन में वृद्धि तथा आपूर्ति में सुधार को देखते हुए आयात में रूकावट देखी जा सकती है।

कोकिंग कोल, नॉन कोकिंग (स्टीम) कोल, लो एश मटालार्जिकल कोक नेप्था की आपूर्ति के प्रबंधन में एमएमटीसी सफल रही है, घरेलू बाजार में अभी कोकिंग कोल की मांग एवं आपूर्ति में बड़ा अंतर है भविष्य में जिसका और अधिक होने की संभावना है। अपनी जेवी कम्पनी –नीलाचल इस्पात निगम लिमिटेड, डुबरी, उड़िसा के लिए एमएमटीसी नियमित आधार पर कोकिंग कोल का आयात करती है।

आपकी कम्पनी के इस समूह ने 6395.10 मिलियन रुपए का कुल व्यापार किया है जिसमें 5703.80 मिलियन रुपए के आयात तथा

691.30 मिलियन रुपए के हाईड्रोकार्बन का घरेलू व्यापार शामिल हैं। इसमें 5703.80 मिलियन रुपए के हार्ड कोकिंग कोल का आयात शामिल है। पॉवर यूटिलिटीज द्वारा आयात कोल की कम मांग तथा खुली निविदाओं में एमएमटीसी को बैक–अप देने में आपूर्तिकर्ताओं की उदासीनता के परिणाम स्वरूप वित्त वर्ष 2016–17 में एमएमटीसी द्वारा आयातित कोल की शून्य निविदाएं की गई तथा कोई आपूर्ति नहीं की गई।

एमएमटीसी ने अभी तक मुख्यतः सराकारी पॉवर यूटिलिटीज की आवश्यकताओं को पूरा करने पर ध्यान केन्द्रित किया है तथापि अधिक व्यापार बढ़ाने के लिए एमएमटीसी भारत में सीमेंट, स्पांज आयरन इकाईयों तथा कैप्टिव ऊर्जा संयंत्रों को आयातित स्टीम कोल की आपूर्ति के अवसरों की संभावनाओं को खोज रही है।

माईका

जैसा कि पूर्व वर्षों में सूचित किया गया है कि विश्व के बाजारों की बदलती आवश्यकताओं तथा माईका प्रस्संकरण तकनीकों में तकनीकी विकास के कारण वर्ष 2002–03 से माईका प्रभाग के कार्य कलाप रुके हुए हैं। मैसर्स मीकान के परामर्श के अभ्रक नगर, कोडरमा जिले में भूमि को प्रयोग करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

अन्य

आपकी कम्पनी के सामान्य व्यापार समूह ने राजस्व आसूचना निदेशालय द्वारा किए गए आबंटन के आधार पर वर्ष 2016–17 के दौरान 445.10 मिलियन रुपए मूलय के लाल चन्दन (रेड सैडर्स) का निर्यात किया। यह प्रथम अवसर है जब एमएमटीसी ने इस संवेदनशील उत्पाद का निर्यात किया है। गजेन्द्रगढ़ में स्थित विंड फार्म से उत्पन्न विंड ऊर्जा की बिक्री से 77.40 मिलियन रुपए अर्जित किए गए।

सचेतक स्टेटमैंट

निगम के प्रोजेक्शनस अनुमानों तथा उम्मीदों को प्रकट करने वाली प्रबंधन चर्चा एवं विश्लेषण लागू नियमों व विनियमों के अभिप्राय के अंतर्गत "फारवर्ड लुकिंग स्टेटमैंटस" हो सकती है। वास्तविक परिणाम व्यक्त किए गए अथवा अंतर्निहित परिणामों से वास्तव में भिन्न हो सकती हैं। निगम के कार्यकलापों में भिन्नता वाले प्रमुख कारकों में मांग/आपूर्ति को प्रभावित करने वाली आर्थिक परिस्थितियां तथा घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों, जिनमें कम्पनी व्यापार करती है, में मूल्य परिस्थितियां, सरकार विनियमों/नीतियां, कर कानूनों, अन्य विधाओं में परिवर्तन तथा आकस्मिक कारक शामिल हैं।